श्री राधामाधव रस सुधा

षोडश गीत

भाई जी

हनुमान परसाद पौद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

॥ महाभाव-रसराज-वन्दना ॥

दोउ चकोर, दोउ चंद्रमा, दोउ अलि, पंकज दोउ।
दोउ चातक, दोउ मेघ प्रिय, दोउ मछरी, जल दोउ ॥ १॥
आस्त्रय-आलंबन दोउ, बिषयालंबन दोउ।
प्रेमी-प्रेमास्पद दोउ,तत्सुख-सुखिया दोउ ॥२॥
लीला-आस्वादन-निरत, महाभाव-रसराज।
बितरत रस दोउ दुहुन कौं,रचि बिचित्र सुठि साज ॥३॥
सहित बिरोधी धर्म-गुन,जुगपत नित्य अनंत।
बचनातीत अचिन्त्य अति,सुषमामय श्रीमंत ॥४॥
श्रीराधा-माधव-चरन, बंदौं बारंबार।
एक तत्त्व दो तनु धरैं, नित-रस-पारावार ॥५॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग मालकोस- तीन ताल)

राधिके तुम मम जीवन-मूल।
अनुपम अमर प्रान-संजीवनि, नहिं कहुँ कोउ समतूल ॥ १ ॥
जस सरीर में निज-निज थानहिं, सबही सोभित अंग।
किंतु प्रान बिनु सबहि ब्यर्थ, नहिं रहत कतहुँ कोउ रंग ॥ २ ॥
तस तुम प्रिये ! सबनि के सुख की, एक मात्र आधार।
तुम्हरे बिना नहीं जीवन-रस, जासौं सब कौ प्यार ॥ ३॥
तुम्हरे प्राननि सौं अनुप्रानित, तुम्हरे मन मनवान।
तुम्हरौ प्रेम-सिंधु-सीकर लै, करौं सबहि रसदान ॥ ४॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग मालकोस- तीन ताल)

तुम्हरे रस-भंडार पुन्य तैं, पावत भिच्छुक चून।
तुम सम केवल तुमहि एक हौ, तनिक न मानौ ऊन ॥ ५ ॥
सोऊ अति मरजादा, अति संभ्रम-भय-दैन्य-सँकोच ।
नहिं कोउ कतहुँ कबहुँ, तुम-सी रसस्वामिनि निस्संकोच ॥ ६ ॥
तुम्हरौ स्वत्व अनंत नित्य, सब भाँति पूर्न अधिकार।
कायब्यूह निज रस-बितरन, करवावती परम उदार ॥ ७ ॥
तुम्हरी मधुर रहस्यमई, मोहनि माया सौं नित्य।
दच्छिन बाम रसास्वादन हित, बनतौ रहूँ निमित्त ॥ ८ ॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्‌गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग रागेश्वरी - ताल दादरा)

हौं तो दासी नित्य तिहारी।
प्राननाथ जीवन-धन मेरे, हौं तुम पै बलिहारी ॥ १ ॥
चाहें तुम अति प्रेम करौ, तन-मन सौं मोहि अपनाऔ।
चाहें द्रोह करौ, त्रासौ, दुख देइ मोहि छिटकाऔ ॥ २ ॥
तुम्हरौ सुख ही है मेरौ सुख, आन न कछु सुख जानौं।
जो तुम सुखी होउ मो दुखमें, अनुपम सुख हौं मानौं ॥ ३ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग रागेश्वरी - ताल दादरा)

सुख भोगौं तुम्हरे सुख कारन, और न कछु मन मेरे।
तुमहि सुखी नित देखन चाहीँ, निसि-दिन साँझ-सबेरे ॥ ४ ॥
तुमहि सुखी देखन हित हौं, निज तन-मन कौं सुख देऊँ।
तुमहि समरपन करि अपने कौं, नित तव रुचि कौं सेंऊँ ॥ ५ ॥
तुम मोहि 'प्रानेस्वरि', 'हृदयेस्वरि', 'कांता' कहि सचु पावौ ।
यातें हौं स्वीकार करौं सब, जद्यपि मन सकुचावौ ॥ ६ ॥

हनुमान परसाद पौद्दार जी महाराज

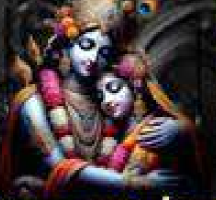

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

हे आराध्या राधा ! मेरे मन का तुझमें नित्य निवास ।
तेरे ही दर्शन कारण मैं, करता हूँ गोकुल में वास ॥ १ ॥
तेरा ही रस-तत्त्व जानना, करना उसका आस्वादन।
इसी हेतु दिन-रात घूमता, मैं करता वंशीवादन ॥ २ ॥
इसी हेतु स्नान को जाता, बैठा रहता यमुना-तीर ।
तेरी रूपमाधुरी के दर्शन हित, रहता चित्त अधीर ॥ ३ ॥
इसी हेतु रहता कदम्बतल, करता तेरा ही नित ध्यान।
सदा तरसता चातक की ज्यौं, रूप-स्वाति का करने पान ॥ ४ ॥
तेरी रूप-शील-गुण-माधुरि, मधुर नित्य लेती चित चोर।
प्रेमगान करता नित तेरा, रहता उसमें सदा विभोर ॥ ५॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

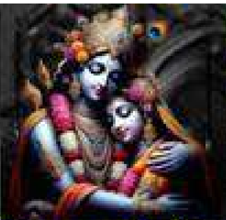

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्‌गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

मेरी इस विनीत विनती को सुन लो, हे व्रजराजकुमार !
युग-युग, जन्म-जन्म में मेरे, तुम ही बनो जीवनाधार ॥ १ ॥
पद-पंकज-पराग की मैं, नित अलिनी बनी रहूँ नंदलाल !
लिपटी रहूँ सदा तुमसे मैं, कनकलता ज्यों तरुण तमाल ॥ २ ॥
दासी मैं हो चुकी सदा को, अर्पण कर चरणों में प्राण।
प्रेम-दाम से बँध चरणों में, प्राण हो गये धन्य महान ॥ ३॥
देख लिया त्रिभुवन में, बिना तुम्हारे और कौन मेरा।
कौन पूछता है 'राधा' कह, किसको राधा ने हेरा ॥४॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

इस कुल, उस कुल- दोनों कुल, गोकुल में मेरा अपना कौन ?
अरुण मृदुल पद-कमलों की, ले शरण अनन्य, गयी हो मौन ॥ ५ ॥
देखे बिना तुम्हें पलभर भी, मुझे नहीं पड़ता है चैन।
तुम ही प्राणनाथ नित मेरे, किसे सुनाऊँ मन के बैन ॥ ६ ॥
रूप-शील-गुणहीन समझकर, कितना ही दुतकारो तुम।
चरणधूलि मैं चरणों में ही, लगी रहूँगी, बस, हरदम ॥ ७॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग परज- तीन ताल)

हे बृषभानुराजनन्दिनि ! हे अतुल प्रेम-रस-सुधा-निधान !
गाय चराता वन-वन भटकूँ, क्या समझूँ मैं प्रेम-विधान ॥ १ ॥
ग्वाल-बालकों के सँग डोलूँ, खेलूँ सदा गँवारू खेल ।
प्रेम-सुधा-सरिता तुमसे, मुझ तप्त धूल का कैसा मेल ? ॥ २ ॥
तुम स्वामिनि अनुरागिणि! जब देती हो प्रेमभरे दर्शन ।
तब अति सुख पाता मैं, मुझ पर बढ़ता अमित तुम्हारा ऋण ॥ ३ ॥
कैसे ऋण का शोध करूँ मैं, नित्य प्रेम-धन का कंगाल ।
तुम्हीं दयाकर प्रेमदान दे, मुझको करती रहो निहाल ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग परज - तीन ताल)

सुन्दर श्याम कमल-दल-लोचन, दुखमोचन व्रजराज किशोर !
देखूँ तुम्हें निरन्तर हिय-मन्दिर में, हे मेरे चितचोर! ॥ १ ॥

जोग लोक-मान-कुल-मर्यादा के, शैल सभी कर चकनाचूर ।
रक्खूँ तुम्हें समीप सदा मैं, करूँ न पलक तनिक भर दूर ॥ २ ॥

पर मैं अति गँवार ग्वालिनि, गुणरहित, कलंकी, सदा कुरूप।
तुम नागर, गुण-आगर, अतिशय कुलभूषण, सौन्दर्य-स्वरूप ॥ ३ ॥

मैं रस-ज्ञान-रहित, रसवर्जित, तुम रसनिपुण, रसिक-सिरताज ।
इतने पर भी, दयासिंधु ! तुम मेरे उर में रहे विराज ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार - श्रीराधा के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

हे प्रियतमे राधिके ! तेरी महिमा अनुपम, अकथ, अनंत ।
युग-युग से गाता मैं अविरत, नहीं कहीं भी पाता अन्त ॥ १ ॥
सुधानन्द बरसाता हिय में, तेरा मधुर वचन अनमोल ।
बिका सदा के लिये मधुर दृग-कमल, कुटिल भ्रुकुटी के मोल ॥ २ ॥
जपता तेरा नाम मधुर अनुपम, मुरली में नित्य ललाम।
नित अतृप्त नयनों से तेरा, रूप देखता अति अभिराम ॥ ३ ॥
कहीं न मिला प्रेम शुचि ऐसा, कहीं न पूरी मन की आश।
एक तुझी को पाया मैंने, जिसने किया पूर्ण अभिलाष ॥ ४ ॥
नित्य तृप्त निष्काम नित्य में मधुर अतृप्ति, मधुरतम काम।
तेरे दिव्य प्रेम का है यह, जादूभरा मधुर परिणाम ॥ ५ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

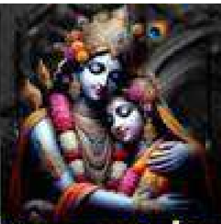

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार – श्रीकृष्ण के प्रति

(राग भैरवी तर्ज - तीन ताल)

सदा सोचती रहती हूँ मैं, क्या दूँ तुमको, जीवनधन !
जो धन देना तुम्हें चाहती, तुम ही हो वह मेरा धन ॥ १ ॥
तुम ही मेरे प्राणप्रिय हो, प्रियतम ! सदा तुम्हारी मैं।
वस्तु तुम्हारी तुमको देते, पल-पल हूँ बलिहारी मैं ॥ २ ॥
प्यारे ! तुम्हें सुनाऊँ कैसे अपने मन की सहित विवेक ।
अन्यों के अनेक, पर मेरे तो तुम ही हो, प्रियतम ! एक ॥ ३ ॥
मेरे सभी साधनों की, बस एकमात्र हो तुम ही सिद्धि ।
तुम ही प्राणनाथ हो, बस, तुम ही हो मेरी नित्य समृद्धि ॥ ४ ॥
तन-धन-जन का बन्धन टूटा, छूटा भोग-मोक्ष का रोग।
धन्य हुई मैं, प्रियतम ! पाकर एक तुम्हारा प्रिय संयोग ॥ ५ ॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार –श्रीराधा के प्रति

(राग गूजरी - ताल कहरवा)

राधे ! हे प्रियतमे ! प्राण-प्रतिमे ! हे मेरी जीवन-मूल !
पल भर भी न कभी रह सकता, प्रिये ! मधुर मैं तुमको भूल ॥ १ ॥
श्वास-श्वास में तेरी स्मृति का, नित्य पवित्र स्त्रोत बहता।
रोम-रोम अति पुलकित तेरा, आलिंगन करता रहता ॥ २ ॥
नेत्र देखते तुझे नित्य ही, सुनते शब्द मधुर यह कान।
नासा अंग-सुगन्ध सूँघती, रसना अधर-सुधा-रस-पान ॥ ३ ॥
अंग-अंग शुचि पाते नित ही, तेरा प्यारा अंग-स्पर्श ।
नित्य नवीन प्रेम-रस बढ़ता, नित्य नवीन हृदय में हर्ष ॥ ४॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार - श्रीकृष्ण के प्रति

(राग गूजरी - ताल कहरवा)

मेरे धन-जन-जीवन तुम ही, तुम ही तन-मन, तुम सब धर्म ।
तुम ही मेरे सकल सुख सदन, प्रिय निज जन, प्राणों के मर्म ॥ १ ॥
तुम्हीं एक, बस, आवश्यकता; तुम ही एकमात्र हो पूर्ति ।
तुम्हीं एक सब काल, सभी विधि, हो उपास्य शुचि सुन्दर मूर्ति ॥ २ ॥
तुम ही काम-धाम सब मेरे, एकमात्र तुम लक्ष्य महान।
आठों पहर बसे रहते तुम, मम मन-मन्दिर में भगवान * ॥ ३ ॥
सभी इन्द्रियों को तुम शुचितम, करते नित्य स्पर्श-सुख-दान।
बाह्याभ्यन्तर नित्य निरन्तर, तुम छेड़े रहते निज तान ॥ ४॥

* आठों प्रहर सरसते रहते तुम मन सरवर में रसवान

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्‌गार - श्रीकृष्ण के प्रति

(राग गूजरी - ताल कहरवा)

कभी नहीं तुम ओझल होते, कभी नहीं तजते संयोग।
घुले-मिले रहते करवाते-करते, निर्मल रस-सम्भोग ॥ ५ ॥
पर इसमें न कभी मतलब कुछ, मेरा तुमसे रहता भिन्न।
हुए सभी संकल्प भंग मैं-मेरेके समूल तरु छिन्न ॥ ६॥
भोक्ता, भोग्य - सभी कुछ तुम हो, तुम ही स्वयं बने हो भोग।
उहा मेरा मन बन सभी तुम्हीं हो, अनुभव करते योग-वियोग ॥ ७ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग शिवरंजनी - तीन ताल)

मेरा तन-मन सब तेरा ही, तू ही सदा स्वामिनी एक।
अन्यों का उपभोग्य न भोक्ता है कदापि, यह सच्ची टेक ॥ १ ॥
तन समीप रहता न स्थूलतः, पर जो मेरा सूक्ष्म शरीर।
क्षणभर भी न विलग रह पाता, हो उठता अत्यन्त अधीर ॥ २ ॥
रहता सदा जुड़ा तुझसे ही, अतः बसा तेरे पद-प्रान्त।
तू ही उसकी एकमात्र जीवन की, जीवन है निर्भान्त ॥ ३॥
हुआ न होगा अन्य किसी का, उसपर कभी तनिक अधिकार।
नहीं किसी को सुख देगा, लेगा न किसी से किसी प्रकार ॥ ४॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग शिवरंजनी - तीन ताल)

यदि वह कभी किसी से किंचित्, दिखता करता-पाता प्यार।
वह सब तेरे ही रस का, बस, है केवल पवित्र विस्तार ॥ ५ ॥
कह सकती तू मुझे सभी कुछ, मैं तो नित तेरे आधीन।
पर न मानना कभी अन्यथा, कभी न कहना निज को दीन ॥ ६ ॥
इतने पर भी मैं तेरे, मन की न कभी हूँ कर पाता।
अतः बना रहता हूँ सतत, तुझको दुख का ही दाता ॥ ७ ॥
अपनी ओर देख तू मेरे, सब अपराधों को जा भूल।
करती रह कृतार्थ मुझको, दे पावन पद-पंकज की धूल ॥ ८ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

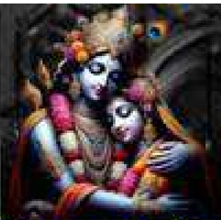

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग शिवरंजनी - तीन ताल)

तुमसे सदा लिया ही मैंने, लेती लेती थकी नहीं।
अमित प्रेम-सौभाग्य मिला, पर मैं कुछ भी दे सकी नहीं ॥ १ ॥
मेरी त्रुटि, मेरे दोषों को तुमने देखा नहीं कभी।
दिया सदा, देते न थके तुम, दे डाला निज प्यार सभी ॥ २ ॥
तब भी कहते – 'दे न सका मैं तुमको कुछ भी, हे प्यारी !
तुम-सी शील-गुणवती तुम ही, मैं तुम पर हूँ बलिहारी' ॥ ३ ॥
क्या मैं कहूँ प्राणप्रियतम से, देख लजाती अपनी ओर।
मेरी हर करनी में ही तुम प्रेम देखते, नन्दकिशोर ! ॥ ४॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्‌गार – श्रीराधा के प्रति

(राग वागेश्री - तीन ताल)

राधे ! तू ही चित्तरंजनी, तू ही चेतनता मेरी।
तू ही नित्य आत्मा मेरी, मैं हूँ, बस, आत्मा तेरी ॥ १ ॥
तेरे जीवन से जीवन है, तेरे प्राणों से हैं प्राण।
तू ही मन, मति, चक्षु, कर्ण, त्वक्, रसना, तू ही इन्द्रिय-घ्राण ॥ २ ॥
तू ही स्थूल-सूक्ष्म इन्द्रिय के, विषय सभी मेरे सुखरूप।
तू ही मैं, मैं ही तू, बस, तेरा-मेरा सम्बन्ध अनूप ॥ ३ ॥
तेरे बिना न मैं हूँ, मेरे बिना न तू रखती अस्तित्व ।
अविनाभाव विलक्षण यह सम्बन्ध, यही, बस, जीवन-तत्त्व ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग वागेश्री - तीन ताल)

तुम अनन्त सौन्दर्य-सुधा-निधि, तुममें सब माधुर्य अनन्त ।
तुम अनन्त ऐश्वर्य-महोदधि, तुममें सब शुचि शौर्य अनन्त ॥ १ ॥
सकल दिव्य सद्गुण-सागर तुम, लहराते सब ओर अनन्त ।
सकल दिव्य रस निधि तुम अनुपम, पूर्ण रसिक, रसरूप अनन्त ॥ २ ॥
इस प्रकार जो सभी गुणों में, रस में अमित, असीम, अपार ।
नहीं किसी गुण-रस की उसे अपेक्षा कुछ भी, किसी प्रकार ॥ ३ ॥
फिर, मैं तो गुणरहित सर्वथा, कुत्सित-गति सब भाँति, गँवार।
सुन्दरता-मधुरता-रहित, कर्कश, कुरूप, अति दोषागार ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग वागेश्री - तीन ताल)

नहीं वस्तु कुछ भी ऐसी, जिससे तुमको मैं दूँ रस-दान।
जिससे तुम्हें रिझाऊँ, जिससे करूँ तुम्हारा पूजन-मान ॥ ५ ॥
एक वस्तु मुझमें अनन्य, आत्यन्तिक है विरहित उपमान ।
'मुझे सदा प्रिय लगते तुम', यह तुच्छ किंतु अत्यन्त महान ॥ ६ ॥
रीझ गये तुम इसी एकपर, किया मुझे तुमने स्वीकार।
दिया स्वयं आकर अपने को, किया न कुछ भी सोच-विचार ॥ ७॥
भूल उच्चता, भगवत्ता सब, सत्ता का सारा अधिकार।
मुझ नगण्य से मिले तुच्छ बन, स्वयं छोड़ संकोच-सँभार ॥ ८ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग वागेश्री - तीन ताल)

मानो अति आतुर मिलने को, मानो हो अत्यन्त अधीर ।
तत्त्वरूपता भूल सभी, नेत्रों से लगे बहाने नीर ॥ ९ ॥
हो व्याकुल, भर रस अगाध, आकर शुचि रस-सरिता के तीर ।
करने लगे परम अवगाहन, तोड़ सभी मर्यादा धीर ॥ १० ॥
बढ़ी अमित, उमड़ी रस-सरिता पावन, छायी चारों ओर।
डूबे सभी भेद उसमें, फिर रहा कहीं भी ओर न छोर ॥ ११ ॥
प्रेमी, प्रेम, परम प्रेमास्पद - नहीं ज्ञान कुछ, हुए विभोर ।
राधा प्यारी हूँ मैं, या हो केवल तुम प्रिय नन्दकिशोर ॥ १२ ॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

राधा ! तुम-सी तुम्हीं एक हो, नहीं कहीं भी उपमा और।
लहराता अत्यन्त सुधा-रस-सागर, जिसका ओर न छोर ॥ १ ॥
मैं नित रहता डूबा उसमें, नहीं कभी ऊपर आता।
कभी तुम्हारी ही इच्छा से, हूँ लहरों में लहराता ॥ २ ॥
पर वे लहरें भी गाती हैं, एक तुम्हारा रम्य महत्त्व ।
उनका सब सौन्दर्य और माधुर्य, तुम्हारा ही है स्वत्व ॥ ३ ॥
तो भी उनके बाह्य रूप में ही, बस, मैं हूँ लहराता।
केवल तुम्हें सुखी करने को, सहज कभी ऊपर आता ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीकृष्ण के प्रेमोद्गार – श्रीराधा के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

एकच्छत्र स्वामिनि तुम मेरी, अनुकम्पा अति बरसाती।
रख के सदा मुझे संनिधि में, जीवन के क्षण सरसाती ॥ ५ ॥
अमित नेत्र से गुण-दर्शन कर, सदा सराहा ही करती।
सदा बढ़ाती सुख अनुपम, उल्लास अमित उर में भरती ॥ ६ ॥
सदा, सदा मैं सदा तुम्हारा, नहीं कदा कोई भी अन्य
कहीं जरा भी कर पाता, अधिकार दास पर सदा अनन्य ॥ ७॥
जैसे मुझे नचाओगी तुम, वैसे नित्य करूँगा नृत्य ।
यही धर्म है, सहज प्रकृति यह, यही एक स्वाभाविक कृत्य ॥ ८ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्‌गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

तुम हो यन्त्री, मैं यन्त्र; काठ की पुतली मैं, तुम सूत्रधार।
तुम करवाओ, कहलाओ, मुझे नचाओ निज इच्छानुसार ॥ १ ॥
मैं करूँ, कहूँ, नाचूँ नित ही परतन्त्र; न कोई अहंकार।
मन मौन - नहीं, मन ही न पृथक; मैं अकल खिलौना, तुम खिलार ॥ २ ॥
क्या करूँ, नहीं क्या करूँ - करूँ इसका मैं कैसे कुछ विचार।
तुम करो सदा स्वच्छन्द, सुखी जो करे तुम्हें, सो प्रिय विहार ॥ ३ ॥
अनबोल, नित्य निष्क्रिय, स्पन्दन से रहित, सदा मैं निर्विकार।
तुम जब जो चाहो, करो, सदा, बेशर्त, न कोई भी करार ॥ ४ ॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

श्रीराधा के प्रेमोद्गार –श्रीकृष्ण के प्रति

(राग भैरवी - तीन ताल)

मरना-जीना मेरा कैसा, कैसा मेरा मानापमान ।
हैं सभी तुम्हारे ही, प्रियतम ! ये खेल नित्य सुखमय महान ॥ ५ ॥
कर दिया क्रीड़नक बना मुझे, निज कर का तुमने अति निहाल ।
यह भी कैसे मानूँ-जानूँ, जानो तुम ही निज हाल-चाल ॥ ६ ॥
इतना मैं जो यह बोल गयी, तुम जान रहे- है कहाँ कौन।
तुम ही बोले भर सुर मुझमें मुखरा-से, मैं तो शून्य मौन ॥ ७ ॥

हनुमान परसाद पोद्दार जी महाराज

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

पुष्पिका

महाभाव-रसराज के, मधुर मनोहर भाव।
दिव्य, मधुरतम, रागमय, दैन्य विभूषित चाव ॥ १॥
दोनों दोनों के लिये, सहज सभी कर त्याग।
सुखद परस्पर बन रहे, छलक रहा अनुराग ॥ २ ॥
दोनों दोनों के सदा, प्रेमी-प्रेष्ठ महान।
नित्य, अनंत, अचिन्त्य, शुचि, अनिर्वाच्य रस खान ॥ 3॥
सुख-दुख दोनों ही सुखद, प्रियतम-सुख के हेतु ।
अन्य सभी टूटे सहज, मिथ्या निजसुख-सेतु ॥ ४ ॥
राधा-माधव-प्रेम-रस, वाचा-चित्त-अतीत।
करते शाखाचन्द्र-से, इंगित सोलह गीत ॥ ५॥

॥श्रीराधाकृष्णचरणकमलेभ्योऽर्पितम्॥

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

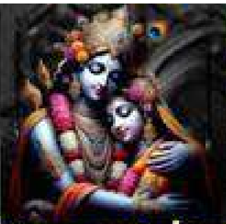

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

षोडश गीत

हनुमान प्रसाद पोद्दार जी महाराज

Designed By:- Dr. Girjesh Singh